२. प्रथमेश एकः कार्य अनेक

प्रथमेश एक : कार्य अनेक

प्रस्तुती डॉ. गजानन शर्मा

पूज्य प्रथमेशजी का आदिवासी सेवा प्रकल्प

पूज्यपाद गोस्वामी रणछोड़ाचार्यजी प्रथमेश ने सन् १९८१ के नवम्बर मास में धर्म प्रचार हेतु विश्व हिन्दू परिषद के तत्त्वावधान में मध्यप्रदेश के आदिवासी बहुल झाबुआ जिले का प्रवास किया । उस समय आपने आदिवासियों की दयनीय स्थिति निकट से प्रत्यक्ष देखी । आपने ईसाई मिशनरियों द्वारा किये जा रहे धर्मान्तरण की भी जानकारी प्राप्त की । आपने धर्मप्रचार और आदिवासियों के उत्थान के लिए झाबुआ जिला गोद लेने का निर्णय किया । इस हेतु आपने ग्रामीण एवं अरण्य सेवा संस्थान बनाया । आजकल यह संस्थान अंतर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् की आदिवासी सेवा उपसमिति के रूप में कार्यरत है । इस संस्थान के माध्यम से झाबुआ में आदिवासी सेवा प्रकल्प का संचालन होता है । संस्थान द्वारा निम्नलिखित कार्य करना निश्चित किया गया --

(१) विद्यार्थियों के लिए विद्यालय एवं छात्रावास आरंभ करना, जिसमें आदिवासी बच्चों के लिए शिक्षण, आवास, भोजन, वस्त्र आदि की निःशुल्क व्यवस्था होगी ।

(२) एक संस्कार केन्द्र का संचालन करना जिसमें बच्चों को अच्छे संस्कार मिलें तथा पुष्टिमार्गीय धर्म शिक्षा भी प्राप्त हो ।

(३) महिलाओं के लिए सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र की व्यवस्था करना ।

(४) एक चलित औषधालय का संचालन करना जो कि आदिवासी क्षेत्रों में जाकर स्वास्थ्य परीक्षण और औषधि वितरण की व्यवस्था करना ।

(५) आदिवासियों को गृह उद्योग का प्रशिक्षण देना और गृह उद्योग के लिए उचित व्यवस्थाएँ करना ।

(६) इस क्षेत्र में कपास, मूंगफली आदि उत्पन्न होते हैं उनके आधार पर उद्योग चलाना । इसके साथ ही बाँस की सामग्री बनाने तथा बढ़ई के काम (कारपेन्टरी) का प्रशिक्षण देना ।

(६) आदिवासियों का आर्थिक शोषण रोकने हेतु उन्हें समुचित सहायता प्रदान करना ।

(७) भारतीय संस्कृति के प्रचार हेतु प्रवचनों, वीडियो-आडियो केसेट्स की व्यवस्था करना । भीली भाषा में साहित्य प्रकाशित करना ।

(८) सम्पन्न व्यक्तियों से सम्पर्क कर, उन्हें प्रेरित कर इस क्षेत्र का सर्वेक्षण करवाना तथा लघु उद्योगों की स्थापना का प्रयास करना जिससे कि आदिवासी गिरिजनों की गरीबी दूर हो सके ।

(९) आदिवासी क्षेत्र में वस्त्र वितरण करना ।

(१०) योग्य एवं वयस्क छात्रों को आगे शिक्षा जारी रखने के लिए पुस्तकें, लेखन सामग्री प्रदान करना तथा परीक्षा शुल्क आदि के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना ।

(११) वनवासी आदिवासियों में धर्म प्रचार करना, उन्हें कंठी प्रदान कर महाप्रभुजी का कल्याणकारी सन्देश देना ।

(१२) महाप्रभुजी का मन्दिर स्थापित कर ग्रामोत्थान केन्द्र का संचालन करना ।

(१३) स्वधर्म से भटके हुए व्यक्तियों को पुनः स्वधर्म में लाना ।

(१४) गौरक्षण एवं गौपालन का कार्य करना ।

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ग्रामीण एवं अरण्य सेवा संस्थान की स्थापना की गयी और वैष्णव परिषद् ने उसे अपनी उपसमिति के रूप में मान्य किया । इसी के माध्यम से झाबुआ में आदिवासियों के बीच सेवा प्रकल्प आरंभ हुआ ।

श्री वल्लभ बाल विद्या निकेतन --

दिनांक २६-३-८२ को श्री वल्लभ बाल विद्या निकेतन की स्थापना की गयी । आरंभ में बालक-बालिकाओं की संख्या कुल २७ थी । आज प्रगति के पथ पर अग्रसर होते हुए छात्र संख्या ३३१ तक पहुंच गयी है । इस बाल विद्यानिकेतन में आदिवासी, हरिजन और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों में निःशुल्क शिक्षण दिया जाता है । उन्हें पाठ्य पुस्तकें, लेखन-सामग्री और गणवेश भी निःशुल्क प्रदान किये जाते हैं । इस कार्य में किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं किया जाता । इसी कारण आर्थिक रूप से कमजोर मुस्लिम बच्चे-बच्चियों को भी निःशुल्क सुविधाएँ प्रदान की गयीं ।

वर्तमान में १ प्रधानाध्यापक, ६ शिक्षिकाएँ, २ शिक्षक, १ रात्रि चौकीदार, पार्ट टाइम पत्रवाहक तथा २ सेविकाएँ कार्यरत हैं ।

संस्था मध्यप्रदेश शासन शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त है । कक्षा ५ तक का शिक्षण दिया जाता है ।

विद्या निकेतन की शाखाएँ

★ झाबुआ से ६५ किलोमीचर दूर आदिवासी बाहुल्य वाले ग्राम बेकल्दा में भेरूपाड़ा में एक बालवाड़ी कार्यरत है । इसमें सभी बच्चे आदिवासी ही हैं । सभी को निःशुल्क शिक्षण दिया जाता है ।

★ झाबुआ से ४० किलोमीटर दूर बामनिया नामक स्थान पर एक प्राथमिक विद्यालय आगामी सत्र से आरम्भ करने के प्रयास जारी हैं ।

श्री वल्लभाचार्य सेवाश्रम

ग्राम बेकल्दा में आचार्य श्री प्रथमेशजी के एक सेवक ने दो बीघा भूमि प्रदान की है जिसमें श्रीमद् वल्लभाचार्य महाप्रभुजी का मन्दिर स्थापित करके वहाँ आदिवासियों के उत्थान का केन्द्र भी संचालित किया जाएगा ।

आदिवासियों में धर्म प्रचार --

श्री वल्लभ बाल विद्या निकेतन के सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं को पुष्टिमार्ग का अध्ययन करने और सूरत की शुद्धाद्वैत महासभा द्वारा संचालित परीक्षा में सम्मिलित होने की प्रेरणा दी जाती है । बच्चों को स्तोत्र पाठ एवं पदगान सिखाये जाते हैं ।

१४ आदिवासी परिवारों को कंठी प्रदान कर पुष्टिमार्ग में प्रवेश की राह दिखाई गयी। २ आदिवासी बच्चे शुजालपुर (म. प्र.) में पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् द्वारा संचालित धर्म संस्कार शिविर में सम्मिलित हुए और दीक्षा भी ली । एक परिवार परिषद् के कार्यकर्ता सम्मेलन द्वारका में सम्मिलित हुआ । इस प्रकार आदिवासियों को पुष्टिमार्ग की शिक्षा, दीक्षा और मार्ग सेवा की प्रेरणा भी दी जा रही है ।

औषधि एवं वस्त्र वितरण --

विगत वर्षों में ३००० से अधिक व्यक्तियों को यहाँ औषधि एवं वस्त्र वितरण किया गया है । इस हेतु कार्यकर्ताओं ने सुदूर आदिवासी अंचलों में जाकर वितरण का कार्य किया है ।

शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता --

कक्षा ५ से आगे पढ़ने वाले आदिवासी बच्चों को पुस्तकें, लेखन-सामग्री, परीक्षा शुल्क आदि भरने के लिए आर्थिक सहायता करने की योजना की है । ४ आदिवासी बच्चों को ऐसी सहायता प्रदान की गयी । एक महिला को भी सहायता दी गयी । यह महिला आजकल नर्स के पद पर कार्यरत है ।

वनिता विकास वीथि --

महिलाओं को सिलाई की शिक्षा देने हेतु एक प्रशिक्षण केन्द्र कार्यरत है । इसे मध्यप्रदेश सरकार के पंचायत विभाग से मान्यता प्राप्त है । इस योजना के अंतर्गत ५२ लड़कियों को सिलाई का डिप्लोमा मिल चुका है ।

स्वधर्म से भटकों को पुनः स्वधर्म में लाना

परिषद् के कार्यों एवं समाज सेवा की प्रवृत्ति से प्रभावित होकर स्वधर्म से भटके हुए तीन परिवारों के १४ व्यक्ति पुनः अपने पूर्वजों के धर्म में लौट आये । झाबुआ प्रकल्प के **संचालक सन्त सीतारामदासजी** के प्रयासों से इन परिवारों की दो कन्याओं का विवाह हिन्दू परिवारों में ही सम्पन्न हुआ जिन्हें पूज्य प्रथमेशजी महाराज के शुभाशीर्वाद प्राप्त हुए।

भवन निर्माण -

झाबुआ का आदिवासी प्रकल्प पहले किराये के भवनों में चलाया गया किन्तु अब वहां अंतर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् का अपना दो मंजिला भवन बन गया है और उसी में झाबुआ प्रकल्प की सभी गतिविधियों का संचालन होता है ।

विद्यार्थियों की बढ़ती हुई संख्या को देख कर श्री वल्लभ विद्या निकेतन प्रातः और दोपहर की दो पालियों में चलाया जा रहा है ।

आगामी सत्र में स्थानाभाव के कारण श्री वल्लभ विद्या निकेतन का संचालन करने में कठिनाई होगी अतः भवन के पास का ही एक प्लाट और खरीद लिया गया है । इस पर भवन बना कर कार्य-विस्तार की योजना है ।

सत्तर वर्ष के युवा संत सीतारामदासजी

पूज्यपाद प्रथमेशजी महाराज ने ग्रामीण एवं अरण्य सेवा संस्थान की स्थापना कर संत श्री सीतारामदासजी वैरागी को इसका कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया । तब से आज तक बाबा सीतारामदासजी झाबुआ प्रकल्प के संचालन का पूरा दायित्व परिषद् की ओर से संभाल रहे हैं । वे सत्तर वर्ष के होंगे लेकिन वे अपने सुख-सुविधा यहाँ तक कि स्वास्थ्य की भी चिन्ता न करते हुए निःस्वार्थ भाव से गो. प्रथमेशजी की आज्ञा का पालन करते हुए आदिवासियों की सेवा में जुटे हुए हैं । उनके उत्साह और कार्यक्षमता को देखकर उन्हें सत्तर वर्ष का युवा कहना उचित प्रतीत होता है । पूज्य प्रथमेशजी महाराज श्री ने अपनी दूरदृष्टि से सही व्यक्ति का चुनाव किया था । आज संत सीतारामदासजी और झाबुआ प्रकल्प एक और अभिन्न वन गये हैं ।

आदिवासियों के बीच प्रथमेशजी

पूज्य प्रथमेशजी महाराज वनवासियों (आदिवासियों) की गरीवी, वीमारी, शोषण और धर्मान्तरण से वहुत व्यथित थे । उन्होंने नवम्बर १९८१ में मध्यप्रदेश के आदिवासी वहुल क्षेत्र झाबुआ जिले का सघन दौरा किया । आप झावुआ, कल्याणपुरा, मोहनकोट,

रायपुरिया, पेटलावद, रामा, फुलेड़ी, फूटतालाब, मेघनगर, परवतिया, काकनवाड़ी, खवासा, बामनिया, खजुरी, थांदला, कोड़ावद, राणापुर आदि स्थानों पर गये । प्रत्येक आदिवासियों से मिलकर उनकी स्थिति को देखा - समझा । वहाँ की जन-सभाओं को सम्बोधित किया। आदिवासियों से आलस्य और नशा छोड़ने का आग्रह किया । आपने कहा कि अपने बच्चों को शिक्षा दिलावें और सच्चे धर्म का आचरण करें । राजनीति से केवल आश्वासन मिलते हैं, उन्नति तो सदाचार, धर्म और संस्कृति के द्वारा होगी । सरकारी नौकरी को ही सबकुछ न समझें ।

आपने पंचमहाल जिले और बांसवाड़ा क्षेत्र का भी दौरा किया । दाहोद, कुशलगढ़, बांसवाड़ा, जालोर, लीमड़ी आदि स्थानों पर आपने सभाओं को सम्बोधित करते हुए आदिवासी बन्धुओं की सेवा राजनीति के भेद-भाव विना करने का आग्रह किया । आपने इस बात पर बल दिया कि आदिवासी हिन्दु समाज के अभिन्न अंग हैं ।

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में अपने राम मन्दिर, बरखेड़ा और राम मन्दिर तात्याटोपे नगर की विशाल जनसभाओं में अपील की । गांवों में जाकर आदिवासियों के बीच कार्य करें । वे अपनी सेवा स्वीकार करें । तो अपने आपको भाग्यशाली समझे, उन्हें गले लगावें । वे हमारे अभिन्न अंग हैं ।

(प्रवास की सामग्री पंडित द्वारकाप्रसादजी पाटोदिया से प्राप्त)

परिषद् ''मैं'' नहीं, सम्प्रदाय है.

—प्रथमेश

आदिवासियों के सम्बन्ध में प्रथमेशजी का चिन्तन

पूज्य प्रथमेशजी का स्पष्ट मत था कि हरिजन, आदिवासी तथा अन्य पिछड़ा वर्ग हिन्दू समाज का अभिन्न अंग है । राजनीति ने उनमें वर्ग - विद्वेष की भावना उत्पन्न की है । राजनीति प्रयासों से उनकी उन्नति नहीं हो सकती । इसके लिए आदिवासी क्षेत्रों में आदिवासी कार्यकर्ता ही तैयार करने होंगे । आदिवासियों को यह बताना होगा कि अशिक्षा, आलस्य और नशा उनकी प्रधान बाधाएं हैं । आदिवासी अपने बच्चे-बच्चियों को शिक्षित करें और स्वयं भी प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों में भाग लेकर शिक्षित बनें । आलस्य और नशा छोड़ें । सदाचार धर्म और संस्कृति के माध्यम से अपनी उन्नति करें ।

इसके लिए आप शिक्षण संस्थाओं, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों और धर्म संस्कार केन्द्रों के संचालन पर विशेष बल देते थे । झाबुआ में आपने यह कार्य आरम्भ भी किया था । आदिवासी कार्यकर्ताओं के निर्माण और प्रशिक्षण के लिए आप सदैव प्रेरणा देते थे ।

आदिवासियों में सदाचार के प्रति जागरुकता, धर्म संस्कार और धर्म शिक्षा के लिए साहित्य के प्रकाशन और प्रचार की ओर आपका विशेष लक्ष्य था । आपने अपने अनेक पत्रों में लिखा था वैष्णव परिषद् को पिछड़े क्षेत्रों में उत्थान के कार्य करने चाहिए । महाप्रभुजी का साहित्य, वार्ता साहित्य, शिक्षा पत्र, स्त्रोत अर्थ सहित भीली भाषा में प्रकाशित होना चाहिए । श्रीमद् वल्लभाचार्य का जीवन चरित्र भी आप भिली भाषा में प्रकाशित करवाना चाहते थे ।

आपकी उत्कृष्ट कामना थी कि भीली भाषा में 'पुलिन्द' नाम से एक बुलेटिन प्रकाशित किया जाय जिसमें भीलों की गौरव गाथा दी जावे और पुष्टिमार्ग के सिद्धान्तों का भी परिचय मिले ।

आपने भीलों को शिक्षा दी, उन्हें वैष्णव बनाया, आपने परिषद् से आग्रह किया कि भीलों को अपना धर्म समझाना है, जिससे वे हमारे धर्म से बहिर्मुख न हों । 'स्टेटमेन' तथा अग्निवेश आदि के दुष्प्रचारों का आपने खण्डन किया और सिद्ध किया कि पुष्टि मार्ग में आदिवासियों से किसी भी प्रकार का भेद नहीं किया जाता है । दुष्प्रचार हिन्दू समाज में वर्ग विद्वेष फैलाने के लिए, निहित स्वार्थ वाले राजनीतिज्ञों के द्वारा किये जाते हैं ।

आदिवासियों को सरकारी नौकरी को ही सब कुछ न मानने की आपने सलाह दी। आपका आग्रह था कि आदिवासियों को उद्योगों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए । इस हेतु आपने उद्योगपतियों के आग्रह किया कि वे इन पिछड़े क्षेत्रों में नये उद्योग आरम्भ करें और आदिवासियों को काम दें, प्रशिक्षण दें, गृह उद्योगों को भी आप बढ़ावा देना चाहते थे ।

आदिवासी महिलाओं को शिक्षा, सिलाई और गृह उद्योग सिखाने के लिए आपने योजनाएँ आरम्भ कीं । आप आदिवासियों का वास्तविक और सर्वांगीण विकास चाहते थे । उनमें धार्मिक चेतना और सदाचार सम्पन्न बनाना चाहते थे । आदिवासियों को ही परिषद् के कर्मठ और समर्पित कार्यकर्ता बना कर उनमें आत्मविश्वास की ज्योति जगाना चाहते थे । उनकी ही भाषा में साहित्य देकर उनके अन्तर्तम में आत्म गौरव और संस्कार देना चाहते थे । आज पूज्य प्रथमेशजी के आदिवासी सेवा के आदर्श को पूर्ण करने के लिए उनके समर्पित कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है । यह सच्ची गुरु-सेवा होगी ।

प्रस्तुति - डॉ. गजानन शर्मा
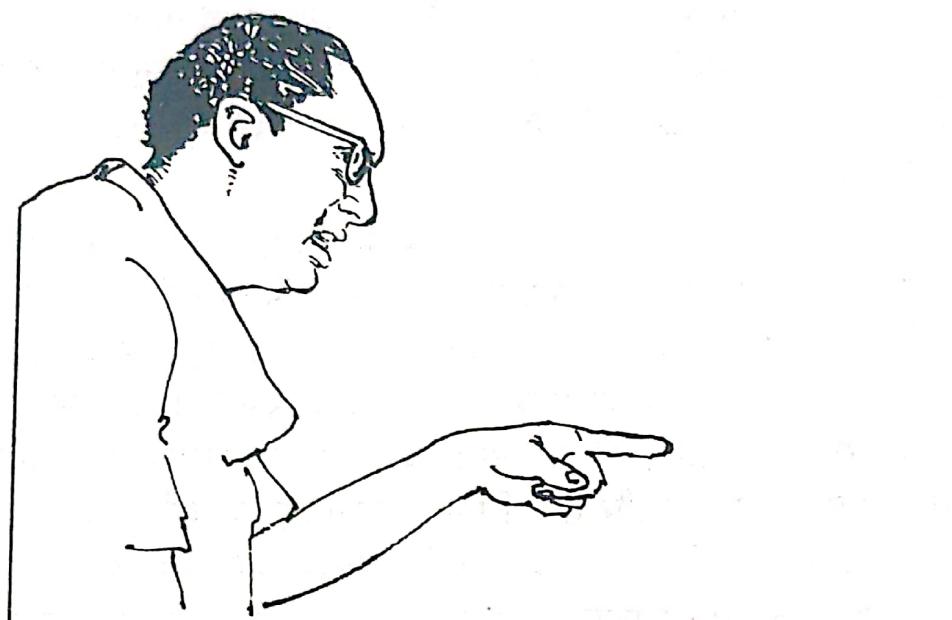
स्वयं को हीन न मानें

हम श्री महाप्रभुजी का कार्य नहीं कर पा रहे हैं, धर्म की ऐसी उपेक्षा करने पर भी आपश्री ने हमें वैष्णव रूप में स्वीकार किया है. परिषद् के कार्य को गति मिले इसके लिए 'श्री सर्वोत्तम' का पाठ करो, कठिनाइयाँ तो आएँगी, किन्तु सब दूर होंगी, प्रभु सामर्थ्य प्रदान करेंगे, स्वयं को हीन मानने की आवश्यकता नहीं है. श्रीहरि हमारे साथ विराजते हैं, वे सर्वसमर्थ हैं.

— प्रथमेश

सभी आदिवासी और अन्य स्वजनों से अनुरोध

आज तक आप सभी के पूर्वज धर्म रक्षक रहे हैं किन्तु कालचक्र के परिवर्तन से आपका सम्बन्ध धर्म और अपनी मूल परम्परा से हट गया है और इससे आप अपने में अलगाव का अनुभव करने लगे हैं ।

आज तक राजनीति के द्वारा आपको जो आश्वासन मिले इससे कोई काम सिद्ध नहीं हुआ । इसका परिणाम यह आया कि आप लोग अपने में पिछड़ापन का अनुभव करने लगे और हीन भावना के शिकार हुए । हमारा यह आपसे अनुरोध है कि आप धर्म और संस्कृति के द्वारा अपनी उन्नति करें । इससे आपको महान् लाभ होगा । सरकारी नौकरी ही सब कुछ नहीं है । आप सदाचार और स्वधर्म का पालन करके हर प्रकार की उन्नति कर सकते हैं ।

आलस और नशा दोनों को छोड़कर धर्म शिक्षा के द्वारा अपने समाज को विद्वान् बनाइये और सच्चाधर्म का आचरण करके आप सभी निष्कपट होकर महान् सामाजिक और आर्थिक के साथ ही धार्मिक उन्नति कर सकते हैं । आज सचाई का अभाव और सरल व्यवहार न होने से मनुष्य ही मनुष्य को हानि पहुंचा रहा है । यह धर्म है फिर भी इसको समाज सेवा और उन्नति का मार्ग समझा कर लोगों को गुमराह किया जा रहा है । आप सभी मिलकर धर्म सुनें और सीखें जिससे आपका ज्ञान भी बढ़ेगा और आप विद्वान् होकर लोगों को सही रास्ते पर आने का प्रेम से आमन्त्रण देकर सभी का स्नेह प्राप्त कर सकते हैं । यह राजनीति की सहायता स्वार्थ पर आधारित है । धर्म की सहायता और सेवा तो परमार्थ और पुण्य है जिसको बिना कपट के करके सभी अपना उद्धार कर सकते हैं ।

ग्रामीण एवं अरण्य सेवा संस्थान आपकी इस विषय में सहायता करके अपने आप को भाग्यशाली मानेगा । साथ ही आपके ही कार्यकर्ता बिना राजनीति के भेद-भाव के इस सेवा संस्थान की बहुत उन्नति कर सकते हैं । आशा है राजनीति से दूर रह कर आप सभी अपना जीवन ऊँचा उठाने की सेवा स्वीकार करके हमें गौरव प्रदान करेंगे । मैं सभी को आशीर्वाद देता हूँ और आमन्त्रित करता हूँ कि आप स्वयं अपनी उन्नति करके देश और धर्म के गौरव बनेंगे ।

भवदीय

गो. र. प्रथमेश

जगद्‌गुरु श्री वल्लभाचार्य प्रथम पीठाधीश्वर

हरिजनों के सम्बन्ध में प्रथमेशजी के विचार

हरिजनों के सम्बन्ध में पूज्य प्रथमेशजी के विचार क्रान्तिकारी थे और उनके लिए आपने पुष्टिमार्ग के द्वार सदा खुले रखे थे । हरिजनों के सम्बन्ध में आपके विचार पठनीय हैं ---

पुष्टिमार्ग, भक्तिमार्ग है। वेदमार्ग के समान उसमें स्त्री-शूद्रों पर प्रतिबन्ध नहीं है । जिसकी भक्ति-मार्ग पर चलने की तैयारी हो, ऐसा जीव मात्र इस मार्ग में आ सकता है। हमारे पूर्वज श्रीमद् वल्लभाचांर्यजी और प्रभुचरण श्री गुसाईंजी ने ऐसे अनेक शूद्रों को शरण लिया है । हमारा वार्ता साहित्य इसका साक्षि है । यदि कोई शूद्र आए तो अभी उसे नाममंत्र देकर उसे वैष्णव वनाने के लिए तैयार हूं । हरिजनों से हमारा कोई विरोध नहीं है ।

(बडौदा में वैष्णव परिषद् के अधिवेशन में)

वैष्णव आचार्यों ने प्राणिमात्र को बिना किसी भेद-भाव के भगवत्प्राप्ति का अधिकारी माना । इन आचार्यों के पास एक ही दिव्य सन्देश था कि मनुष्य मात्र को भगवत् - शरणागति का अधिकार है और भगवान् की शरण में जाने पर वह कैसा भी जीव क्यों न हो परम पवित्र और शुद्ध हो जाता है ।

श्रीमद् भागवत सभी वैष्णवाचार्यों का शिरोमणि ग्रंथ है । इस ग्रंथ में स्पष्ट लिखा है --

पद्भ्यां भगवतो यज्ञे शुश्रूषा - धर्म-सिद्धये ।

तस्यां जातः पुरा शूद्रो यद्वृत्या तुस्यते हरिः ।।

श्रीमद् भागवत के अनुसार परमानन्द भगवान् के चरणारविन्द से सेवा उत्पन्न हुई और सेवा से शूद्र की उत्पत्ति हुई । और श्रीहरि इस शूद्रवृत्ति या सेवावृत्ति से ही सन्तुष्ट होते हैं । हमारे शास्त्रकारों के अनुसार सेवा और शूद्र में घनिष्ठ सम्बन्ध है और सेवक का स्थान सबसे ऊँचा माना है । सेवक को हरि का भी हरि कहा गया है । जो सेवक हो सकता है, वह सव कुछ हो सकता है । शूद्र होना हमारे शास्त्रकारों की दृष्टि में गौरव की वस्तु है । किन्तु सेवक के लिए अनिवार्य शर्त है आत्मसमर्पण । बिना आत्मसमर्पण के कोई व्यक्ति सेवक नहीं हो सकता और आत्मसमर्पण तव तक नहीं हो सकता जव तक हम अपने अहंकार और ममत्व को सम्पूर्ण रूप से त्याग न दें इसीलिए सभी वैष्णवाचार्यों ने समर्पण और सेवा पर विशेष जोर दिया है ।

- - - - - - अस्पृश्यता हमारे सदाचार और पवित्रता के सम्पादन का अनिवार्य अंग है, तो इसकी नितान्त आवश्यकता है, किन्तु यदि इससे घृणा और राग-द्वेष का जन्म होता

है तो यह अत्यन्त निन्दनीय है । जिस प्रकार जाह्नवी (गंगाजी) का स्नान हमारे पापों को नष्ट करता है और गंगा स्नान करने वाला स्वयं को पावन समझता है, यह अपराध नहीं है । किन्तु यदि वह दूसरों को अपवित्र या अस्पृश्य समझता है तो यह अत्यन्त अनुचित है । उसी प्रकार हमारे धर्मशास्त्र भी साधना की दृष्टि से नई दिशा प्रदान करते हैं, वैष्णवाचार्यों ने कभी किसी को न तो अस्पृश्य माना है और न कभी किसी से घृणा की है। उनके मतानुसार जिस प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों की चार जातियाँ हैं, उसी प्रकार वैष्णवों की भी एक पंचम जाति है और इस जाति में वे सभी लोग सम्मिलित हो जाते हैं, जिन्होंने गुरु के मुख से भगवान् के नाम का श्रवण किया है । भले ही वे किसी भी जाति या धर्म को मानने वाले या न मानने वाले क्यों न हों । वैष्णवाचार्यों का यह कथन सर्वथा शास्त्रीय प्रमाणों पर आधारित है । जैसे --

ब्रह्म - क्षत्रिय - विट् - शूद्राश्चत स्रो जातयो यथा ।

स्वतंत्रा जातिरेका च विश्वस्मिन् वैष्णवा भिधा ।।

(ब्रह्म वैवर्तपुराण, ब्रह्म खण्डम् ११ । ४१)

श्रीमद् वल्लभाचार्य के मतानुसार प्राणिमात्र भगन्नाम ग्रहण करने पर अच्युत गोत्र और निष्पाप हो जाता है । (अन्तर्राष्ट्रीय वैष्णव महासम्मेलन, वाराणसी में २९-७-१९७४ को अध्यक्षीय अभिभाषण से)

सदाचार, विचार और आचरण को पवित्र बनाने के लिए है और छूआछूत मानसिक द्वेष और घृणा पर आधारित है । (धर्महीन शासकों से समस्त वैष्णव समाज का अनुरोध)

मध्यप्रदेश में आगर में मेरे शिष्य हरिजन हैं तथा मोड़ी गाँव में हैं अभी तक पिछड़ी जातियों का महत्व इस धर्म के बड़ों ने नहीं समझा । जबकि यह अकिंचन और निस्साधन भक्तिमार्ग है और इस के प्रभु सर्वोद्धारक हैं । हरिजनों के छात्रावास की भी उपेक्षा की गयी है । हमें एक व्यक्ति हरिजनों के लिए कार्य करने वाला चाहिए ।

(बाबा सीतारामदासजी वैरागी, झाबुआ को पत्र, दिनांक ३-८-१९८८)

हरिजनों की वाल्मीकि सेना के गुप्त परिपत्र की संलग्न प्रति पर विचार करें तो झाबुआ तथा आगर में हरिजनों को वैष्णव बनाने के कार्य की महत्ता आपको समझने में कठिनाई नहीं होगी । नाथद्वारा में निषेध करके ठीक नहीं किया जा रहा है । समय को पहचान कर कार्य करने से ही धर्म रक्षा होगी ।

(अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् को लिखा गया पत्र दिनांक ८-८-८८)

नाथद्वारा के विषय में भ्रामक प्रचार जानबूझ कर किया जा रहा है । अपने मन्दिरों में मुसलमान तक आये हैं और दर्शन किये तथा करते हैं । हरिजन उनसे नीचे नहीं है, न उनके आने पर रोक है । यह राजनैतिक षडयंत्र मात्र है ।

(डॉ. विनोदजी दीक्षित को पत्र दिनांक ६-११-१९८८)

भारतीय समाज को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास किया जा रहा है । (श्री चीमनभाई शेठ को पत्र दिनांक ८ अगस्त १६८८) भीलों और हरिजनों को उकसाने का प्रयत्न हो रहा है । हमारे धर्म में राजनेता राजनीतिक हस्तक्षेप बन्द करें इस भावना को जाग्रत करना है । हमें भील तथा हरिजन कार्यकर्ता तैयार करना है, इसका लक्ष्य बनावें । वर्ग-विद्वेष की नीति का त्याग करना ही ठीक है । आदिवासी और हरिजन हिन्दू समाज के अभिन्न अंग हैं ।

(संत सीतारामदासजी वैरागी को पत्र दिनांक ३-८-८८)

अपने विचारों के अनुरूप प्रथमेशजी महाराज ने १६४५ से ही हरिजनों को कंठी देना आरंभ कर दिया था । उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश के कई गाँवों में आपके हरिजन शिष्य हैं । आपका स्पष्ट मत था कि हरिजनों को वैष्णव बनावें । उन्हें वैष्णव आचार-विचार सिखावें और हरिजनों के बीच कार्य करने के लिए हरिजन कार्यकर्ता तैयार करें । आपके हरिजन शिष्यों के आचार-विचारों में ऐसी शुद्धता है कि उन्हें वन्दन करने की इच्छा होती है ।

प्रस्तुति - डॉ. गजानन शर्मा

यह जीवन और यह देह सम्प्रदाय से बड़ी नहीं है.

—प्रथमेश

पूज्यपाद प्रथमेशजी द्वारा प्रेरित

श्रीमद् वल्लभाचार्य ऋषिकुल

- डॉ. गजानन शर्मा

अन्तर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् ने बालकों एवं युवा पीढ़ी में संस्कार निर्माण के लिए कई योजनाएं पूज्यपाद गो. प्रथमेशजी महाराजश्री की प्रेरणा से आरम्भ कीं । उज्जैन में बाल मन्दिर और झाबुआ में श्रीवल्लभ विद्या निकेतन आरंभ किये गये । प्रतिवर्ष दीर्घ अवकाशों में धर्म संस्कार शिविरों के आयोजन भी किये जाने लगे । इस शृंखला में एक भव्य, विराट् और स्थायी योजना 'श्रीमद् वल्लभाचार्य ऋषिकुल' की तैयार की गयी। इस योजना में बालक-बालिकाओं को योग्य शिक्षकों द्वारा शिक्षा प्रदान करने के साथ ही उन्हें पुष्टिमार्गीय तत्वज्ञान, सेवा प्रणाली, कीर्तन आदि का भी उच्चकोटि का ज्ञान दिया जाए यह परिकल्पना रखी गयी । इस ऋषिकुल से धर्म सेवा करने वाले निष्ठावान् और तेजस्वी कार्यकर्ताओं के निर्माण की अपेक्षा है ।

अन्तर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् की राजकोट शाखा ने इस योजना के क्रियान्वयन का दायित्व लिया । इस योजना के प्रथम चरण के रूप में भूमि प्राप्त की गयी। राजकोट से १४ किलोमीटर दूर राजकोट-मोरवी रोड़ पर रतनपर के रईश श्री किरीटसिंह सुरुभा झाला तथा श्री प्रवीणसिंह सुरुभा झाला दरबार बन्धुओं ने इस पावन उद्देश्य के लिए साढ़े चार एकड़ भूमि अन्तर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् को प्रदान की । यह भूमि विना मूल्य और बिना किसी शर्त के उदारतापूर्वक दान में दी गयी ।

ऋषिकुल योजना का स्वरूप

(१) ऋषिकुल में १५०० बालकों को शिक्षण प्रदान करने के लिए भव्य भवन का निर्माण किया जाएगा ।

(२) इसके साथ ही १५०० बालकों के आवास के लिए भी सुविधायुक्त भवन बनाया जाएगा ।

(३) एक सभा भवन का निर्माण किया जाएगा जिसमें सभी बालक एक साथ बैठकर स्तोत्रपाठ, कीर्तन और स्वमार्गीय ग्रंथों एवं प्रणालिका का शिक्षण प्राप्त कर सकें ।

(४) बालकों के विद्यादान के लिए सुशिक्षित, स्वमार्गीय ज्ञान सम्पन्न योग्य एवं निष्ठावान् शिक्षकों और शास्त्रियों में आमंत्रित किया जाएगा । इनके लिए तथा ऋषिकुल के अन्य कर्मचारियों के लिए भी आवास की व्यवस्था की जाएगी ।

(५) शिक्षण हाइस्कूल स्तर तक दिया जाएगा । कालान्तर में अनुकूलता होने पर हायर सेकेंडरी या महाविद्यालय स्तर तक विकास हो सकेगा ।

(६) स्कूली शिक्षा और स्वमार्गीय ज्ञान के साथ ही बालकों के स्वास्थ्य की दृष्टि से योगाभ्यास तथा खेलकूद का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा । इस हेतु योग्य प्रशिक्षकों एवं खेल मैदानों की व्यवस्था की जाएगी ।

(७) पूज्यपाद गोस्वामी महानुभावों के बालकों के अध्यापन एवं स्वमार्गीय ज्ञान प्राप्ति के लिए समुचित व्यवस्था की जाएगी । उनके आवास आदि की भी मर्यादानुकूल उचित व्यवस्था की जाएगी । इस हेतु दस सुविधा सम्पन्न ब्लाक्स प्रस्तावित हैं ।

(८) ऋषिकुल परिसर में 'श्रीमद् वल्लभाचार्य उपवन' का निर्माण सुव्यवस्थित रूप से किया जाएगा ।

(९) सम्पूर्ण परिसर पक्की दीवार से घिरा हुआ होगा ।

(१०) पूज्य गो. इन्दिरा बेटीजी द्वारा प्रेरित वैष्णव वृद्धाश्रम का निर्माण किया जाएगा । इसमें वृद्ध वैष्णवों को वैष्णव जीवन प्रणाली के अनुसार जीवन यापन की सुविधा प्रदान की जाएगी ।

(११) लगभग एक एकड़ भूमि में आधुनिक गौशाला का निर्माण कराया जाएगा और निष्णात संचालकों के माध्यम से गौ सेवा और गौ संवर्धन का कार्य किया जाएगा ।

(१२) बालकों को गृह उद्योग तथा विज्ञान पर आधारित तकनीकी ज्ञान भी दिया जाएगा ।

उपर्युक्त ऋषिकुल योजना का कार्य प्रगति पर है । योजना विराट् है अतः पर्याप्त समय लगेगा तथा विभिन्न चरणों में यह पूर्ण होगी ।

श्री वल्लभ प्रकाशनन्यास क्यों व कैसे

- श्री कुमनदास झालानी

पुष्टिमार्ग में जनोपयोगी एवं जीवनोपयोगी तथा लौकिक जीवन को आलौकिक बनाने वाले सिद्धान्तों को समझने एवं अनुसरण करने हेतु जनसाधारण के लिये उनका सरल सुबोध भाषा में अधिकाधिक प्रचार नितांत व निरन्तर आवश्यक है । पू. पा. प्रथमेशजी ने भी वैष्णव समाज के सुदृढ़ संगठन के साथ-साथ सम्प्रदाय के व्यापक प्रचार-प्रसार की ओर विशेष ध्यान दिया था ।

वैसे तो सन् १६५६ के पूर्व पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् ने भी प्रकाशन कार्य को प्राथमिकता दी थी और अच्छी मात्रा में प्रकाशन हुवा भी किन्तु जन साधारण की दृष्टि से बहुत कुछ होना बाकी था ।

सन् १६५६ में जब अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् बनी तब से पू. पा. प्रथमेशजी ने प्रचार कार्य का दायित्व सम्भाला और अपने जीवन पर्यन्त प्रचाराध्यक्ष के रूप में कार्यरत रहे, ग्रन्थ लिखे और परिषद् की शाखाओं को भी इस ओर प्रेरित करते रहे । श्री वल्लभ विज्ञान मासिक ने जिसे बाद में परिषद् ने अपने मुख-पत्र के रूप में मान्य किया, हिन्दी में प्रशंसनीय प्रकाशन कार्य किया तथा परिषद् की इन्दौर, कलकत्ता आदि शाखाओं ने भी अच्छी मात्रा में ग्रन्थ प्रकाशित किये ।

प्रकाशन कार्य में वित्तीय कठिनाइयाँ होना स्वाभाविक है इस चिन्तन को लेकर १६८० में उज्जैन सिंहस्थ पर्व के अवसर पर परिषद् की कार्यकारिणी समिति ने बैठक में उपस्थित पू. पा. श्याम मनोहरजी महाराज, पू. पा. प्रथमेशजी महाराज एवं पू. पा. वृजाधीशजी महाराज के मार्ग दर्शन में प्रकाशन हेतु एक स्थायी प्रकाशन निधि स्थापित करने का निर्णय लिया जो इस निधि में परिषद् की शाखाओं के माध्यम से कुछ द्रव्य भी संग्रहित हुआ ।

सन् १६८१ में परिषद् को अन्तर्राष्ट्रीय रूप मिला । उसके २ माह पश्चात् हुई कार्यकारिणी समिति की ७-६-८१ की बैठक में उक्त तीनों आचार्यों की प्रेरणा से प्रकाशन कार्य के लिये परिषद् के अंतर्गत श्री वल्लभ प्रकाशनन्यास का गठन का निर्णय हुआ । ३०-८-८१ को परिषद् की केन्द्रीय कार्यकारिणी ने न्यास की रुपरेखा स्वीकृत की और १४ मार्च ८२ को अपेक्षित धनराशि स्वीकृत कर कार्यकारिणी ने न्यास के गठन को ठोस रूप प्रदान किया । साहित्य संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार को महत्व देने हेतु इस न्यास का उद्देश्य भारतीय तत्त्वज्ञान तथा संस्कृति के अध्ययन, अध्यापन, प्रचार-प्रसार और प्रकाशन के द्वारा मानव मात्र के सर्वांगीण उत्थान का प्रयास करना, परस्पर प्रेम, सोहार्द, बन्धुत्व, आत्मीयता और भगवदीयता बढ़ाना है । इस न्यास का कार्यालय इन्दौर में है और पब्लिक

ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत है जिसका क्रमांक २२७/१०-५-८५ है ।

इस न्यास के प्रारंभिक ट्रस्टी निम्नानुसार थे :--

१. पू. पा. श्याम मनोहरजी महाराज, बम्बई (अध्यक्ष)

२. श्री डॉ. गजाननजी शर्मा, धार (मंत्री)

३. श्री कुमनदासजी झालानी, इन्दौर (कोषाध्यक्ष)

४. श्री विट्ठलदासजी कारानी, बम्बई (सदस्य)

५. श्री मुकुन्दभाई शाह, बम्बई (सदस्य)

६. श्री सोनी ब्रजलाल भाई, इन्दौर (सदस्य)

७. श्री ब्रजमोहनदासजी विजयवर्गीय, शुजालपुर (अ.पु.मा.वै. समिति के प्रतिनिधि)

बाद में पू. पा. गो. श्री १०८ श्री श्याममनोहरजी महाराज के न्यास से पदमुक्त हो जाने से रिक्त स्थान पर श्री सेठ हरिदासजी (मनुभाई) ठाकरसी बम्बई को उसी पद पर परिषद् ने मनोनीत किया । इसी प्रकार श्री बृजलाल भाई के गोलोकवासी हो जाने से उनके स्थान पर इन्दौर के श्री मदनदासजी नागर मनोनीत किये गये हैं । न्यास के माध्यम से अब तक जो ग्रन्थ प्रकाशित हुए वे इस प्रकार हैं :--

(१) **चतुःश्लोकी : धर्म - अर्थ काम-मोक्ष की पुष्टिमार्गीय विवेचना** :

गो. श्री श्याम मनोहरजी

(२) **विवेक** : गो. श्री श्याममनोहरजी

(३) **वेद भागवतम** : भागवत् भूषण श्री रमणलालजी कृ. शास्त्री

(४) **अष्ट छापीय भक्ति संगीत - उद्भव और विकास** :

कीर्तनाचार्य चंपकलालजी नायक

(५) **पुष्टि स्तवन** : कुमनदास झालानी

(६) **पुष्टि मार्ग** : डॉ. गजानन शर्मा

(७) **श्रीमद् वल्लभाचार्य** : डॉ. गजाननजी शर्मा

(८) **सिद्धान्त रहस्यम्** : श्री गोपालदासजी झालानी

अन्य ग्रन्थों का प्रकाशन शीघ्र हो रहा है ।

इसी के माध्यम से श्री वल्लभ विज्ञान मासिक का प्रकाशन भी फिर से किये जाने की योजना है ।

प्रभुकृपा से पू. पा. प्रथमेशजी की प्रेरणा से और सम्प्रदाय के सभी आचार्य, विद्वजन एवं वैष्णवों के सहयोग से यह न्यास अपने उद्देश्य में सफल होगी ऐसा दृढ़ विश्वास है ।

ग्रामोत्थान प्रकल्प

पूज्यपाद गो. प्रथमेशजी महाराज श्री क्रान्तद्रष्टा मनीषी थे । वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वैष्णव दृष्टि से रचनात्मक और क्रान्तिकारी कार्य करने की प्रेरणा देते थे । आपने मध्यप्रदेश के गुना जिले में ग्राम भौंरा पोस्ट कुसेपुर में ग्रामोत्थान का सुन्दर प्रकल्प आरंभ किया था । आसपास के पूरे ग्रामीण अंचल में पूरे के पूरे गाँव वैष्णव हैं अतः आप इस पूरे क्षेत्र को जोड़कर श्रीमद्वल्लभाचार्य की जीवन दृष्टि के अनुरूप ग्रामोत्थान प्रकल्प को साकार रूप देना चाहते थे और उसका केन्द्र भौंरा ग्राम रखना चाहते थे ।

सर्व प्रथम पूज्य प्रथमेशजी ७ फरवरी १६७७ को किराड़ क्षत्रिय समाज के सामूहिक विवाह में गुना जिले की राघोगढ़ तहसील के ग्राम विजयपुर में पधारे । वहां वैष्णवों की संख्या एवं उत्साह देखकर आपने आज्ञा की कि जिला मुकाम गुना में श्री वल्लभ सत्संग भवन का निर्माण किया जाना चाहिए । आपश्री की आज्ञा से वैष्णवों को प्रेरणा मिली और प्रयत्न आरंभ हो गये। दिनांक ३१-१-८५ को पूज्यपाद गो. गोपाललालजी वावा सा. (कोटा) के कर कमलों से श्री वल्लभ सत्संग भवन का शिलान्यास हुआ और आप श्री की अध्यक्षता में दिनांक १२-११-८७ को भवन का उद्घाटन भी हो गया ।

ग्राम झागर ,जिला गुना में आपश्री की आज्ञा से क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। आपश्री तीन दिन तक इस छोटे से गाँव में विराजते और वैष्णवों को धर्म सेवा के लिए तत्पर होने की प्रेरणा देते रहे । ग्राम भौंरा के एक वैष्णव श्री चिरौंजीलालजी ने प्रेरित होकर 'वल्लभाश्रय ' नामक योजना के लिए भूमिदान में देने की इच्छा व्यक्त की । प्रथमेशजी महाराजश्री भौंरा पधारे। वहाँ नदी के किनारे की सुरम्य भूमि पर वृक्षारोपण कर 'श्रीवल्लभाश्रय ' सदन की आधारशिला रखी । इसके वाद ५-३-८५ को महाराज श्री की प्रेरणा से श्री वल्लभाश्रय के लिए श्रम शिविर का आयोजन किया गया । इसमें आपश्री ने स्वयं श्रमदान किया । आपके साथ ही वैष्णव परिषद के केन्द्रीय और प्रान्तीय कार्यकर्तागण आये थे । उन्होंने भी तनुजा सेवा की । स्थानीय वैष्णवों ने भी उत्साह पूर्वक श्रमदान मों भाग लिया ।

पूज्य प्रथमेशजी महाराज श्री वल्लभाश्रय ग्रामोत्थान केन्द्र भौंरा में वालोद्यान ,वाल पुस्तकालय,वनिता विकास केन्द्र,चिकित्सालय, धर्मशिक्षणकेन्द्र, कार्यकर्ता प्रशिक्षण केन्द्र और सांस्कृतिक केन्द्र के संचालन की आज्ञा की । तदनुसार वल्लभाश्रम सदन का निर्माण हुआ और आपश्री ने १८ जून १६८६को इस सदन का उद्घाटन किया । इस अवसर वल्लभाश्रम सदन में महाप्रभु श्रीमद्वल्लभाचार्यजी के स्वरूप को पधरा कर प्रतिष्ठित किया गया । सामूहिक यज्ञोपवीत और सामूहिक विवाह के आयोजन भी हुए । मध्यप्रदेश के तत्कालीन पंचायत, ग्रामिण विकास और समाज कल्याण मंत्री माननीय शिवप्रतापसिंह जी ने श्री वल्लभ बालवाड़ी, बालोद्यान और वनिता विकास केन्द्र का उद्घाटन किया ।पूज्य प्रथमेशजी

महाराजश्री ने स्वयं 'श्री वल्लभ आयुर्वेदीय औषधालय ' की स्थापना हेतु १००१- रूपयों का दान किया ।

आज ग्राम भौंरा में आप श्री के द्वारा स्थापित ग्रामोत्थान प्रकल्प कार्यरत हैं ।

प्रस्तुति -डॉ. गजानन शर्मा
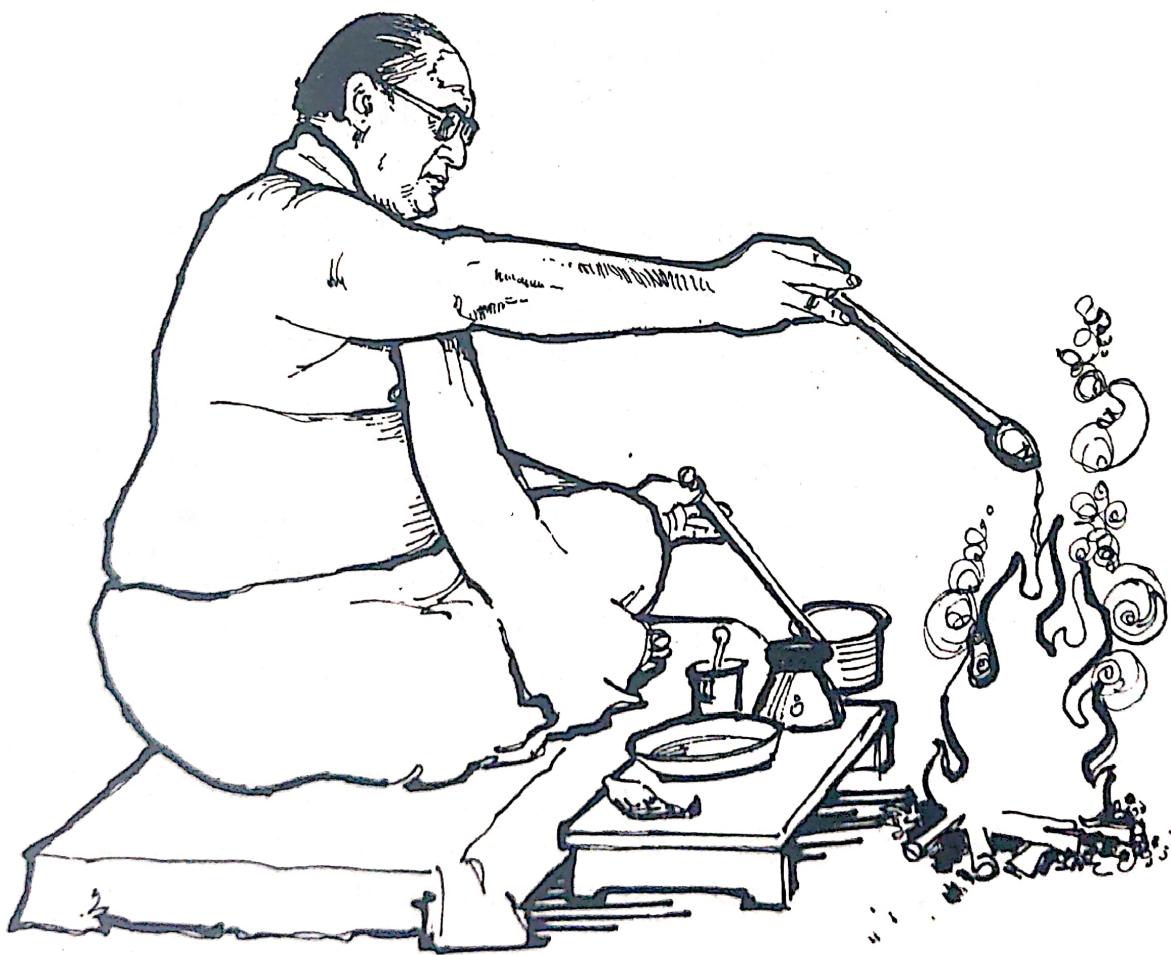
पूज्यपाद प्रथमेशजी महाराज द्वारा सम्पन्न सोमयज्ञ

पूज्यपाद गो. रणछोड़ाचार्यजी प्रथमेश ने अपने वंश में चली आयी वैदिक सोमयज्ञ परम्परा को पुनः संज्ञीवित किया । आपके वंश में श्री यज्ञनाराण ने इस परम्परा का शुभारंभ किया था । और उन्हें इसी कारण दीक्षित कहा जाता था । महाप्रभु वल्लभाचार्यजी के प्राकट्य के पूर्व उनके पूर्वजों ने १००सोमयज्ञ सम्पन्न कर लिए थे । इसके बाद भी श्री वल्लभ दीक्षित श्री गोपीनाथ दीक्षित , श्री विट्ठल दीक्षित ये अभिधान भी इस वंश में सम्पन्न सोमयज्ञों का स्मरण कराते है । बाद में इस वंश में सोमयज्ञ परम्परा लुप्त सी हो गयी थी । आधुनिक युग में पूज्यपाद गो. रणछोडाचार्य "प्रथमेश जी" ने इसे पुनः जीवन्त बनाया । आपश्री ने अपनी धर्मपत्नी सौ.सरोजिनी बहूजी के साथ नौ सोमयज्ञ सम्पन्न किये । इनका विवरण निम्नानु सार है -

(१) सं. २०३६ में उज्जैन कुंभ पर्व के अवसर पर अग्निष्टोम सोमयज्ञ ।

(२) सं. २०३७ में राजकोट में अत्यग्निष्टोम सोमयज्ञ ।

(३) सं. २०३८ में प्रयाग में कुंभ पर्व के अवसर पर माघ मास में शोडषी सोमयज्ञ।

(४) सं. २०३८ चैत्रमास में विलेपार्ले,बम्बई में उकथ्यसोमयज्ञ ।

(५) सं. २०३६ चैत्रमास में श्री पुरूषोत्तम क्षेत्र जगन्नाथपुरी में अतिरात्र सोमयज्ञ।

(६) सं. २०४० चैत्रमास अप्रेल१६८४ में कोटा में आप्तोर्याम सोमयज्ञ ।

(७) सं. २०४१ कार्तिक मास में अहमदाबाद में वाजपेय सोमयज्ञ ।

(८) सं.२०४२ में सुरत में सोमयज्ञ ।

(६) सं. २०४४ में कलकत्ता में सगरूडचयन सोमयज्ञ ।

प्रथमेशजी महाराज के सोमयज्ञ केवल वैदिक कर्म के विराट अनुष्ठान ही नहीं होते थे । उनके माध्यम से आपने वैष्णव समाज के संगठन का भी महत्वपूर्ण कार्य किया था। आप सर्वत्र वैष्णव परिषद् को व्यवस्था के लिए दायित्व सौंपते थे और परिषद् के प्रचाराधिवेशन भी आयोजित करवाते थे । सम्पूर्ण व्यय की व्यवस्था सोमयज्ञ समिति के माध्यम से होती थी ।

सोमयज्ञ सम्पन्न करवाने के लिए दक्षिण भारत से श्री ताताचार्य के नेतृत्व में पंडितों का दल आता था । यज्ञ संवंधी विधानों की आम जनता को जानकारी देने और यज्ञ के महत्व को स्पष्ट करने के लिए हिन्दी या स्थानीय -क्षेत्रीय भाषा में विवेचन भी प्रायः किया जाता था ।

आप के द्वारा सम्पन्न सोमयज्ञों से प्रेरित होकर इस परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए सुरत के गो. श्री वल्लभरायजी और इन्दौर के गो. श्री गोकुलोत्सवजी आगे आये । ये दोनों पूज्य गोस्वामी महानुभाव अनेक सोमयज्ञ सम्पन्न कर चुके हैं और आगे भी इस परम्परा को अविच्छिन्न रखने का विचार रखते हैं ।

प्रस्तुति - डा. गजानन शर्मा

युवा पीढ़ी के लिए धर्म संस्कार शिविर

पूज्य पाद गोस्वामी प्रथमेश जी युवा पीढ़ी को धर्म शिक्षा देकर संस्कार सम्पन्न वनाना चाहते थे । उनकी आकांक्षा थी कि युवा पीढ़ी वैष्णव धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों को और आधुनिक युग में उनकी उपादेयता को समझे , अनिष्ट कारी प्रभावों से वचने और वैष्णवता जीवन में लावे । इस उद्देश्य से आपश्री ने पं. द्वारकाप्रसादजी पाटोदिया एवं डॉ. गजानन शर्मा को धर्मसंस्कार शिविरों की योजना वनाने की आज्ञा की । पाटोदियाजी ने धर्मसंस्कार शिविर की रूपरेखा तैयार की और संचालन का दायित्व स्वीकार किया । डॉ. गजानन शर्मा ने इन शिविरों के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया उन्हें शिविर निर्देशक वनाया गया । डा. विनोदजी दीक्षित पंजीयक के रूप में कार्य करने लगे ।

धर्म संस्कार शिविरों में मिडिल कक्षा उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया जाता है । पांच दिन उन्हें शिविईर स्थल पर ही रह कर सघन प्रशिक्षण प्राप्त करना पड़ता है । पांच दिनों में उन्हें वेद, वेदांग , पुराण, दशावतार ,सनातनधर्म की शिक्षा ,पुष्टिमार्ग की विशेषताएँ, पुष्टिमार्ग की प्रणालिका , शुद्धाद्वेत दर्शन, पुष्टिधर्म के आचार्यों एवं भगवदीय वैष्णवों के चरित्र आदि की शिक्षा दी जाती हैं । इसके साथ ही सेवापयोगी कीर्तन भी सिखाये जाते है: वच्चों को धर्मरक्षक वनने की प्रेरणा देने के लिए धर्म राज्य के संस्थापक राजाओं और उनके प्रेरक गुरूओं के चरित्र भी वतलाये जाते है । उन्हें वैष्णव परिषद के ध्वजगीत, जागरणगीत, धर्म की आरती, राष्ट्रीय चेतना जगाने वाले गीत आदि भी सिखाए जाते है। प्रातः स्मरण और स्त्रोतपाठ का अभ्यास करवाया जाता है । स्वास्थ्य संवंधी जानकारी दी जाती है । योगाचार्यो के मार्गदर्शक में योगासन ,प्राणायाम, षड्कर्म आदि का प्रशिक्षण भी दिया जाता है । समूह चर्चा और प्रश्नोत्तरों के द्वारा जहाँ उन्हें विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर दिया जाता है वहीं उनकी जिज्ञासाओं का समाधान भी किया जाता है । वैष्णव परिषद् का इतिहास और गतिविधियों की जानकारी दी जाती है ।

अभी तक कुल १८ धर्मसंस्कार शिविरों का आयोजन निम्नानुसार हुआ हैं ।

वर्ष	स्थान	प्रदेश
१६८०	उज्ञैन	मध्यप्रदेश
१६८१	राजकोट	गुजरात
	भोपाल	मध्यप्रदेश
१६६३	पिपरिया	मध्यप्रदेश
	इन्दौर	मध्यप्रदेश
१६८४	शुजालपुर	मध्यप्रदेश
१६८६	गोधरा	गुजरात

	हरदा	मध्यप्रदेश
	मगरोडा	मध्यप्रदेश
१९८७	वोड़ेली	गुजरात
	कोटा	राजस्थान
	इन्दौर	मध्यप्रदेश
१९८८	भवानीमंडी	राजस्थान
१९८९	धरोनियाँ	राजस्थान
१९९०	राजपीपला	गुजरात
	कोटा	राजस्थान
	व्यावरा	मध्यप्रदेश
१९९१	वम्बई	महाराष्ट्र

इन धर्मसंस्कार शिविरों का नयी पीढ़ी पर अच्छा प्रभाव पड़ा है । पाटोदियाजी, डॉ. गजाननशर्मा , डॉ. विनोद दीक्षित के पास शिविरार्थियों के अनेक पत्र आये है जिनमें यह भावना व्यक्त हुई है कि इन शिविरों में नई पीढ़ी को वहुत ज्ञान मिला, धर्ममय जीवन जीने की प्रेरणा मिली, धर्मसेवा की दिशा मिली । उनके अभिभावकों की ओर से भी प्रशंसात्मक पत्र मिले है ।

धर्मसंस्कार शिविर का पाठ्यक्रम तीन वर्ष का है । किन्तु अधिकतर शिविर प्रथम वर्ष के ही लगे हैं । दो शिविरों में द्वितीय वर्ष का शिविर अभी नहीं लगा है । तृतीय वर्ष के शिविर मुख्यतः धर्म प्रचारक और कार्यकर्ता तैयार करने की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है । पूज्य प्रथमेशजी की योजना थी कि तीन वर्ष पूरे होने पर शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त युवक -युवती वैष्णव जीवन जीने वाले और धर्म की सेवा में तत्पर रहने वाले निष्ठावान कार्यकर्ता वन जाएँगे । ये अन्तर्राष्ट्रीय पुष्टि मार्गीय वैष्णव परिषद के माध्यम से न केवल भारत में अपितु सम्पूर्ण विश्व में पुष्टि पताका फहरा सकेंगे । इस स्वप्न को साकार करने का दायित्व उन सभी पर है जो पूज्य प्रथमेशजी के प्रति श्रद्धा भाव रखते है :

प्रस्तुति -डॉ. गजानन शर्मा

कीर्तन पुस्तक 'रस सत्नाकर' का विमोचन करते हुए

श्री व्रजमोहनदास विजयवर्गीय, शुजालपुर मंडी (म.प्र.)

सदैन्य जयश्रीकृष्ण

यज्ञकर्त्ता श्री प्रथमेश

वल्लभदास बिट्ठलदास पोरबन्दर
सदैन्य जयश्रीकृष्ण

चिंतक श्री प्रथमेश

उद्‌बोधक श्री प्रथमेश १.५.८६

प्रेरक श्री प्रथमेश

वक्ता श्री प्रथमेश

परिषद् अधिवेशन कोटा

दृष्टा श्री प्रथमेश

मार्गदर्शक श्री प्रथमेश
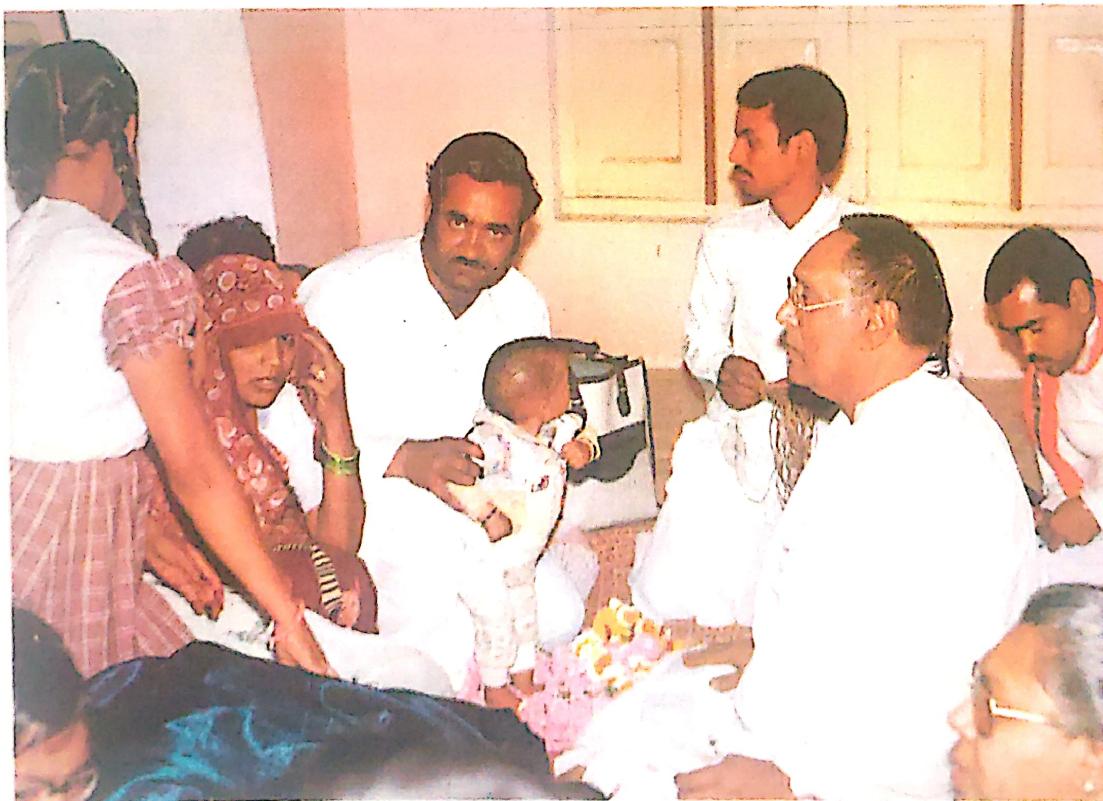
मंत्रोपदेष्टा श्री प्रथमेश

शास्ता श्री प्रथमेश
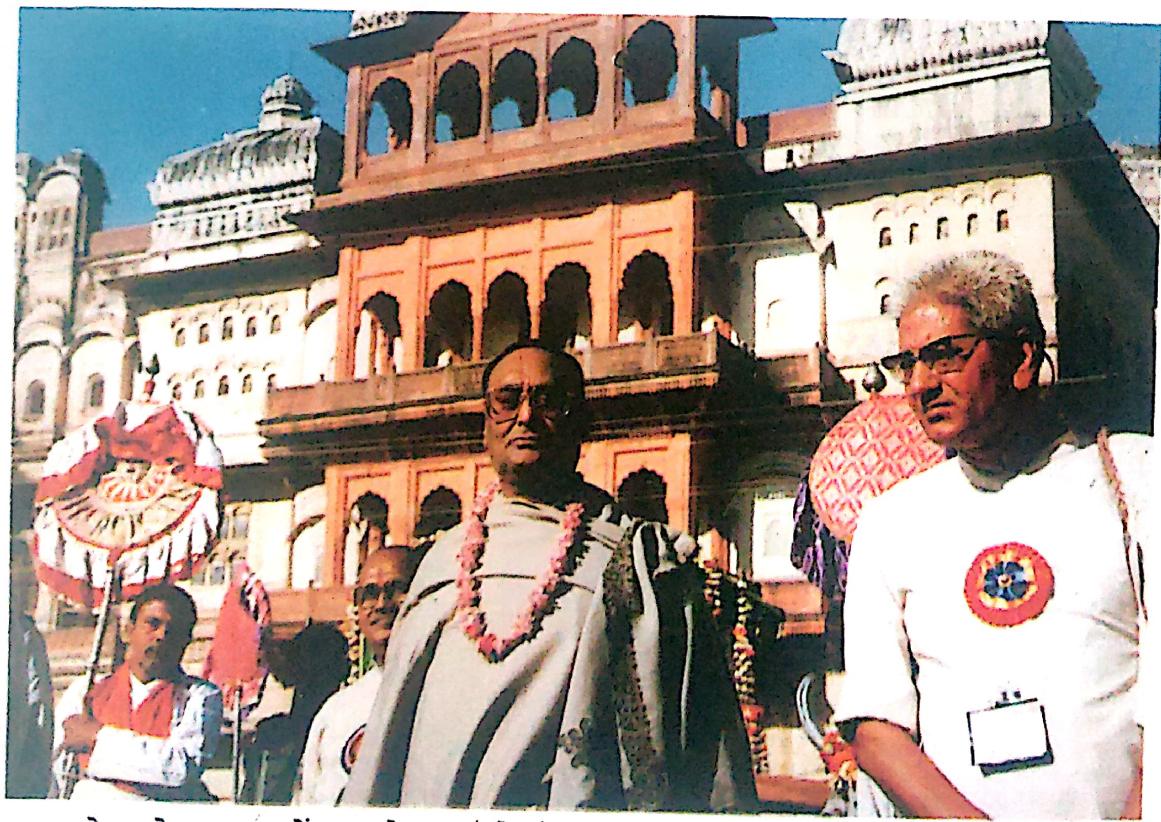
छप्पनभोग शोभा यात्रा में पधारते हुए (कोटा)

साक्षी श्री प्रथमेश

सोमयाजी श्री प्रथमेश

दीक्षित श्री प्रथमेश
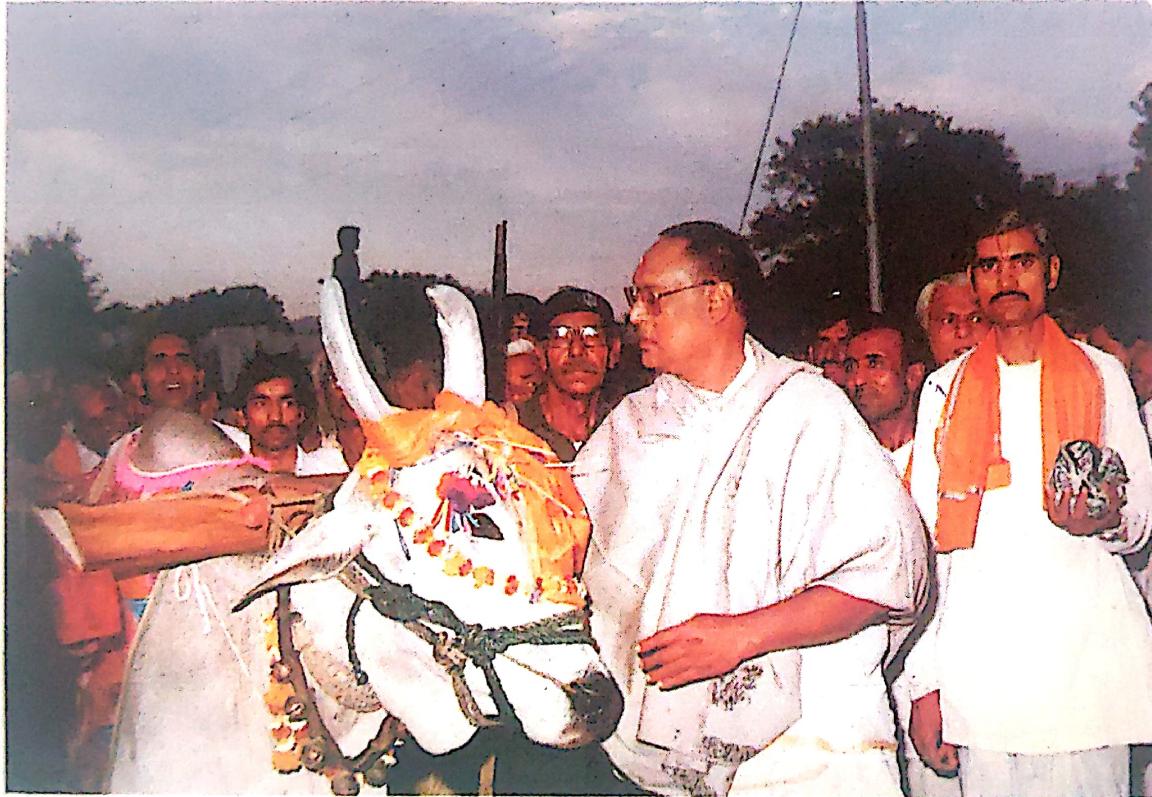
छप्पन भोग में श्री मथुरेशजी को पधराने हेतु
वृषभ पूजन करते हुए

श्री हरकिशनदास मेघजी भाई शाह

मार्फत - जितेन्द्रभाई शाह, बम्बई

सदैन्य जयश्रीकृष्ण

प्रथमेशजी के कतिपय कार्य एक दृष्टि में

१. १९४५ में हरिजन उद्धार कंठी दी ।
२. १९४६ मलखाने आन्योर - जतीपुरा शुद्ध कर कंठी दी ।
३. १९५० धर्म संरक्षण हेतु अखिल भारतीय शुद्धाद्वैत वैष्णव परिषद् की स्थापना।
४. १२ जून ५३ श्री मथुराधीश प्रभु को जतीपुरा ब्रज में पधराया ।
५. १९८१ अन्तर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् ।
६. १९६५ मथुराधीशजी का मनोरथ ।
७. १९५३ से १९६८ तक १३ ब्रज यात्राएं ।
८. २६-११-७४ को जतीपुरा से ग्वालियर तक पद यात्रा ।
९. १९ अप्रैल १९७५ श्री मथुराधीशजी को कोटा पधराया ।
१०. १९८० से सोमयज्ञों की शृंखला प्रारंभ ।
११. मार्च ८६ कोटा में श्री मथुराधीशजी को छप्पन भोग आरोगाथा ।
१२. १९८८ विदेश यात्रा अमेरिका तथा इंग्लैण्ड में धर्म प्रचार ।
१३. श्री वल्लभाचार्य जन कल्याण प्रन्यास की स्थापना ।
१४. ग्रामीण एवं अरण्य सेवा संस्थान ।
१५. पुष्टि श्री वनिता विकास वीथि ।
१६. श्री वल्लभ बाल मन्दिर , उज्जैन ।
१७. श्री वल्लभ विद्या निकेतन, उज्जैन ।
१८. श्री वल्लभ प्रकाशन न्यास, इन्दौर ।
१९. श्री वल्लभ रिसर्च सेंटर, जतीपुरा ।
२०. हरिरायजी का प्राकट्य उत्सव ।
२१. भक्तिवर्धिनी ।
२२. कार्यकर्ता शिविर ।
२३. वैष्णव शिविर ।
२४. धर्म संस्कार शिविर ।
२५. औषधालय, सेवासदन ।
२६. वेद मन्दिर ।

२७. वेद वर्धिनी ।

२८. सेवा फलम् ।

२९. गोवा (लोहगढ़) एवं गंगासागर की बैठकों को प्रकट किया ।

३०. गोवध बन्द के महाभियान में भाग - (७ नवम्बर १९६६) ।

३१. वल्लभाचार्य पंचशताब्दी समारोह ।

३२. सूर पंच शताब्दी ।

३३. पी. पी. एस. की स्थापना ।

३४. वनिता विकास वीथि की स्थापना ।

३५. पुष्टि श्री की स्थापना ।

३६. श्रीमद् वल्लभाचार्य का डाक टिकिट जारी करवाना ।

हम तो सेवक हैं

मेरा धर्म या मेरी संस्था बदनाम न हो यह ध्यान आज तक रखा है और जीवनपर्यन्त रखूंगा. श्री महाप्रभुजी मेरे ऊपर अवश्य कृपा करेंगे - यह विश्वास है. हम तो सेवक हैं. भगवान जो बनायेंगे, वह बनेंगे; इसमें कोई संकोच नहीं. हमें तो भगवदाश्रय से संगठन का प्रयास करना ही उचित है. आज सम्प्रदाय को संभालने की बहुत आवश्यकता है. यह समय निश्चिंत होकर बैठने का नहीं है. परिषद् की बहुत जिम्मेदारी है.

—प्रथमेश

विश्राम घाट सन् १९५३

ब्रज यात्रा का संकल्प लेते हुए श्री प्रथमेश

अध्यक्षता श्री प्रथमेशजी
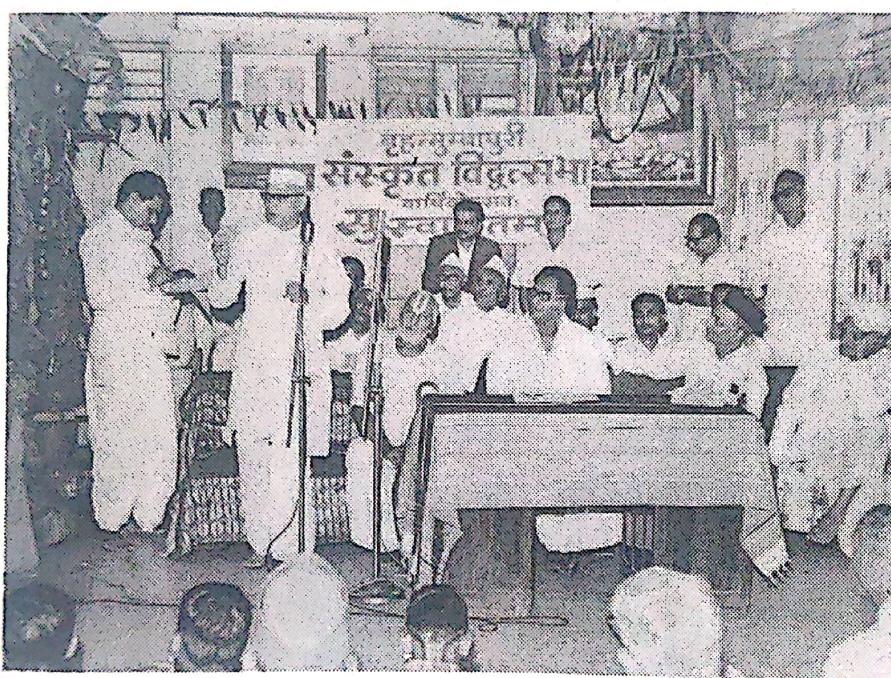
संस्कृत विद्वत सभा, बम्बई

श्रीमद्भागवत को पधराते हुए श्री प्रथमेश १.९.६२

पी.पी.एस. के स्वयंसेवकों के साथ

युवाशक्ति के प्रेरणा स्रोत श्री प्रथमेश

हवनकर्ता श्री प्रथमेश

सोमयज्ञ करते हुए श्री प्रथमेश
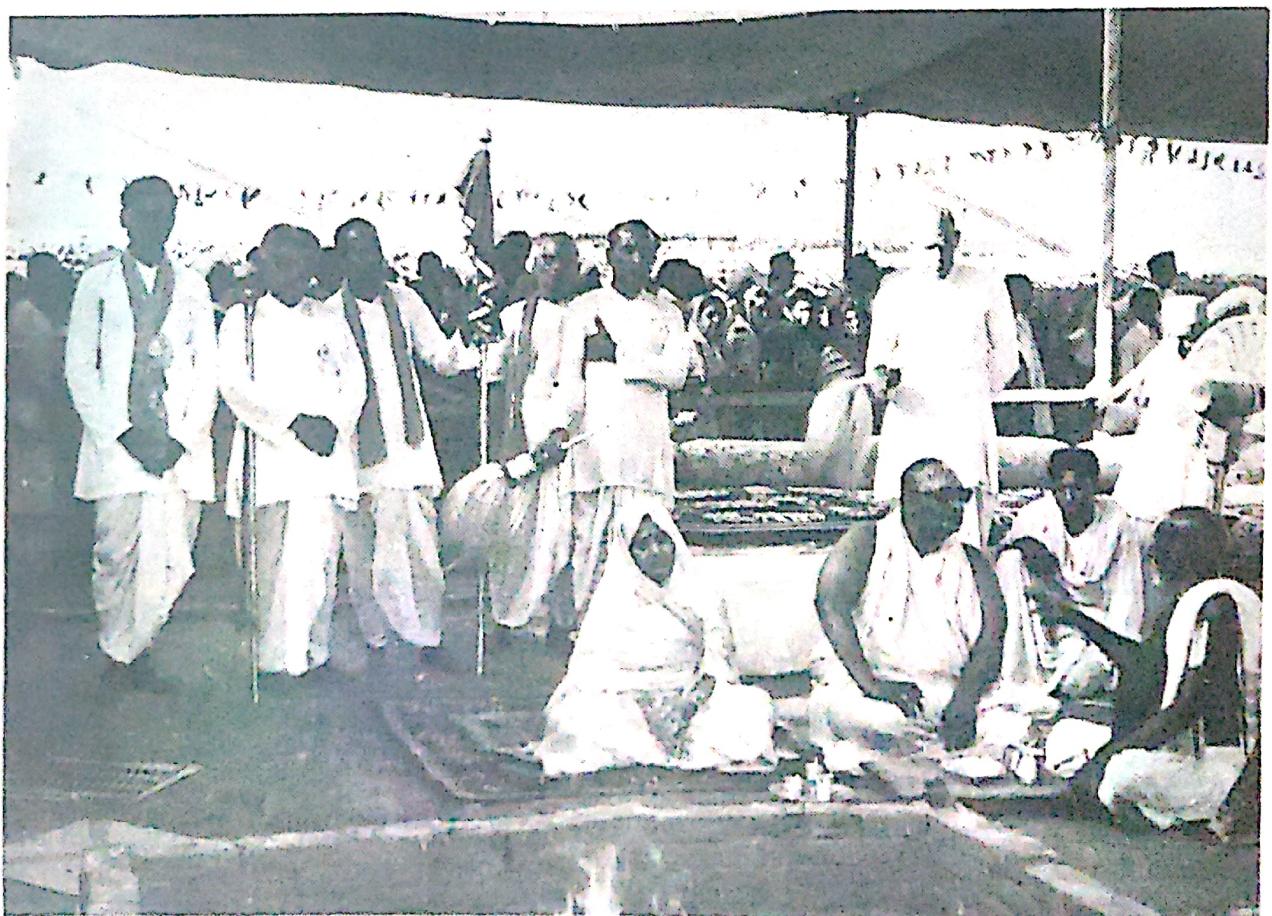
सोमयज्ञ में गो पूजन करते हुए श्री प्रथमेश

अवभृथ स्नान की तैयारी

(गो. प्रथमेशजी के सत्प्रयासों से डाक टिकट जारी)

प्रथम दिवस आवरण FIRST DAY COVER
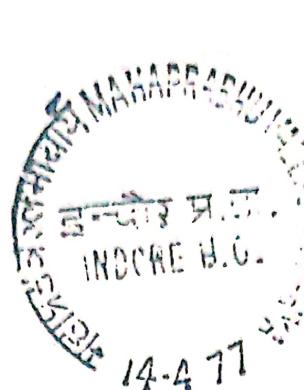
महाप्रभु वल्लभाचार्य MAHAPRABHU VALLABHACHARYA

श्रीमद्वल्लभाचार्य पंचशताब्दी समारोह

डाक टिकट का विमोचन करते हुए

म.प्र. के राज्यपाल श्री सत्यनारायण सिन्हा